प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 निशा अग्रवाल*
सुशील कुमार सिंह**

प्रस्तावना :–

प्रत्येक समाज अपने सदस्यों की शिक्षा का दायित्व स्वयं अपने ऊपर लेता है। वह इस दायित्व का निर्वाह अनेक प्रकार के शिक्षा साधनों से पूरा करने का प्रयास करता है। विद्यालय भी इसी दायित्व को पूरा करने का एक साधन है। जान डी.वी. ने लिखा है कि– ''विद्यालय अपनी चाहारदीवारी के बाहर बृहद समाज का प्रतिबिम्ब है, जिसमें जीवन को जीवन व्यतीत करके सीख जा सकता है, परन्तु यह एक शुद्ध, सरलीकृत तथा उत्तम रूप में समाज होगा।'' समाज में विद्यालय के स्थान महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए एस. बाल कृष्ण जोशी ने लिखा है कि ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्माण विधान सभाओं, न्यायालयों और फैक्ट्रियों में नहीं वरन विद्यालयों में होता है।'' वास्तव में व्यक्ति एवं समाज दोनों की प्रगति के लिए विद्यालय अति आवश्यक है। इसलिए किसी भी सामाजिक ढांचे में इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति शिक्षक होता है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुएं शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। परन्तु जब तक उनमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जायेगी तब तक वे निरर्थक रहेंगी। शिक्षक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लांघकर विश्व–व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है।

मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है। शिक्षक किसी भी शिक्षण संस्थान का प्रमुख स्तम्भ होता है। हुमायूँ कबीर का कथन है कि ''वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं। यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है, परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है, कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी है। यह शिक्षक वर्ग की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है।'' हुमायूँ कबीर ने आगे लिखा है कि ''शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), एस0एन0 सेन बालिका पी0जी0 कालेज, कानपुर
** शोध छात्र, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि – ''अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक – उसके व्यक्तिगत गुण, उनकी शैक्षिक योग्यताएँ, उनका व्यवसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है, ही है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन शिक्षकों पर निर्भर है जो कि उस विद्यालय में कार्य कर रहें हैं।''

इस प्रकार शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा पद्धति में स्पष्ट है। वस्तुतः शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान एवं पतन का भार है। आदर्श शिक्षक मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है।

प्राथमिक विद्यालयों में तो शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राथमिक विद्यालय के छात्र पूर्णतः शिक्षक पर आधारित होते हैं। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का निर्माण करने वाला होता है तथा इस स्तर पर शिक्षक का व्यक्तित्व छात्र को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। अब समय आ गया है जब शिक्षक खुद यह महसूस करें कि उनके विकास में ही छात्र का विकास निहित है। अब आवश्यकता महसूस की जा रही है कि शिक्षक अपनी व्यवसायिक कौशलों का विकास करें। शेरी (1964) ने अपने अनुसंधान में शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिए कुछ कौशलों का उल्लेख किया। लेकिन यह तभी सम्भव है जब शिक्षक तन–मन तथा धन से अपने कार्य के प्रति समर्पित हो।

मानव जीवन दिन–प्रतिदिन व्यस्तता की ओर बढ़ता जा रहा है। व्यस्तता के कारण मानव में तमाम तरह की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ये समस्याएं व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करने लगते हैं। यह तनाव मनुष्य की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है। मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर पड़ जाता है। जब एक शिक्षक इन समस्याओं से ग्रसित होता है तो निश्चय ही शिक्षण–प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो जाता है तथा इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगते हैं जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। प्रभावशीलता में यह कमी शिक्षक में तनाव के कारण हो सकती है।

इस सम्बन्ध में हुए कुछ अध्ययनों के परिणाम यह दर्शाते हैं कि व्यावसायिक तनाव का शिक्षक के कक्षागत व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। बर्नियूँ ने 1982 के अपने शोध में यह परिणाम पाया कि ''उच्च तनाव में अध्यापक छात्रों की आवश्यकता को प्रभावशाली ढंग से पूरा नहीं कर पाते।''

तनाव एवं प्रतिबल के सम्बन्ध में हुए शोध अध्ययन में डॉ0 टी0सी0 ज्ञानानी (1998) के परिणाम दर्शाते हैं कि ''उच्च शिक्षा में संलग्न शिक्षकों के कार्य पर तनाव व प्रतिबल का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।''

मिश्रा (1991) ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव में संस्थागत संधर्ष तथा उनके व्यक्तित्व में बर्न आउट के बीच अंतः सम्बन्ध पर अध्ययन किया। 200 प्राथमिक स्कूल शिक्षकों पर 'रमीह' द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल कानफ्लिक्ट इन्वेन्टरी'' को प्रशासित किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन के लिए माशलों द्वारा निर्मित 'बर्न आउट इन्वेन्टरी, रूटर द्वारा निर्मित 'आई–ई लोकस ऑफ कन्ट्रोल स्केल' तथा इन्हीं की खुलेशिरे वाली 'कोपिंग विहैवियर क्वेश्चनायर' का भी प्रयोग किया।

अनंसधानकर्ता ने विश्लेषण में ANOVA–परीक्षण तथा काई–वर्ग परीक्षण अपनाया तथा निम्न निष्कर्ष पाया गया कि व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार तथा संस्था का प्रबन्धन तनाव सम्बन्धित व्यवहारको नियंत्रित करने तथा भूमिका संघर्ष को कम करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

नारंग (1992) ने दिल्ली के प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं में भूमिका संघर्ष, जबावदेही का ज्ञान तथा व्यावसायिक संस्कृति का अध्ययन किया। शोधकर्त्ता ने अपने शोध में दिल्ली की म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्कूल की 250 विवाहित महिला अध्यापकों को चुना तथा इन पर 'संरचित साक्षात्कार अनुसूची' मापनी को प्रशासित किया। शोधकर्त्ता ने अपने शोध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त कियें–

1–केवल 39 प्रतिशत महिला शिक्षिकाएँ अपने सामाजिक स्तर से संतुष्ट थी।
2–लगभग 50 प्रतिशत शिक्षिकाएँ ऐसी थीं जिन्हें शिक्षक की जिम्मेदारी के साथ–साथ घर–गृहस्थी की जिम्मदारी वहन करनी पड़ती थी।
3–39 प्रतिशत महिलाओं ने शिकायत की थी कि उनके पति का व्यवहार उनके प्रति रूखा है।
4–इन महिला शिक्षिकाओं में से आधे ऐसी थी जो परास्नातक की योग्यता रखते हुए भी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाने से तनाव महसूस करती थीं।
5–शोरगुल युक्त कक्षा, असभ्य विद्यार्थी, विद्यालय का गिरता स्तर आदि ऐसे कारण है जो शिक्षक में तनाव के कारण के रूप में पाया गया।

कापर तथा केली (1993) ने दिल्ली के प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं में भूमिका संघर्ष, जबावदेही का ज्ञान तथा व्यावसायिक संस्कृति का अध्ययन किया। शोधकर्त्ता ने अपने शोध में इन कारकों का व्यावसायिक संतुष्टि तथा मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव को पाया। व्यावसायिक असंतुष्टि के कारण के रूप में अत्यधिक कार्य–भार को (26 प्रतिशत) एक प्रमुख कारक के रूप में पाया गया। व्यावसायिक तनाव के मुख्य कारकों में अत्यधिक कार्यभार, संसाधनों में कमी, निषेध से उत्पन्न समस्या को सामान्य स्रोत के रूप में पाया गया।

हॉग तथा अन्य (1994) ने संगीत तथा गणित के अध्यापकों में ''बर्न आउट'' का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोधकर्त्ता ने आस्ट्रेलिया के माध्यमिक स्कूलों के 103 अध्यापकों (55 संगीत तथा 52 गणित के) को न्यादर्श के रूप में लिया तथा इन पर चार भाग क्वेश्चनायर को प्रशासित किया। शोध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

(1) संगीत के अध्यापकों में गणित के अध्यापकों की अपेक्षा उच्च सांवेगिक थकान तथा अवैयक्तिकरण के स्रोत पाये गये। संगीत के अध्यापकों में बर्न आउट के स्रोत के रूप में – कार्य से सम्बन्धी शोरगुल, भौतिक संसाधन, संस्थागत सम्बन्ध, अन्य विषयों का सहयोग पाया गया।
(2) वे शिक्षक जो बड़े स्कूलों से सम्बन्धित थे, वे अन्य की अपेक्षा कम परेशान थे।
(3) 25 वर्ष से कम आयु के अध्यापकों में अधिक उम्र के अध्यापकों की तुलना में कम थकान पायी गयी।

सुल्ताना (1995) ने व्यावसायिक एवं अव्यवसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत महिला तथा पुरूष अध्यापकों में व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में 50–50 अध्यापकों के समूह पर व्ल्पै स्केल (पारीक, 1983) को प्रशासित किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि –

(1)व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत महिला तथा पुरूष अध्यापकों में व्यवासायिक तनाव सम्बन्धित निम्न क्षेत्रों में सार्थक अन्तर पाया गया –

(i)अत्यधिक कार्य–भार, (ii) अपनी भूमिका सम्बन्धित अनिश्चिता।

(2)अव्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत महिला तथा पुरूष अध्यापकों में व्यावसायिक तनाव सम्बन्धित निम्न क्षेत्रों में सार्थक अन्तर पाया गया।

(i) अपेक्षाएं, (ii) भूमिका संघर्ष, (iii) अपर्याप्ता, (iv) अपनी भूमिका सम्बन्धित अनिश्चितता।

(3) व्यावसायिक व अव्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की व्यावसायिक तनाव के कई क्षेत्रों में पर्याप्त सार्थक अन्तर पाया गया।

पीथर्स एवं फोगार्टी (2005) ने व्यावसायिक शिक्षकों में तनाव का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में 83 अध्यापकों (45 पुरूष तथा 38 महिला) तथा 71 अन्य व्यवसाय तथा रोजगार से सम्बन्धित (34 पुरूष तथा 37 महिला) व्यक्तियों को अपने न्यादर्श के रूप में चुना। शोध कार्य में ओसिपाऊ तथा स्पोकेन (1987) द्वारा निर्मित 'आकुपेशनल स्ट्रेश इन्वेन्टरी' व्ैण्ण्ण् उपकरण का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण ।छव्ट।. परीक्षण द्वारा किया गया तथा निष्कर्ष रूप से पाया गया कि –

(1) शिक्षकों में गैर–शिक्षकों की अपेक्षा अधिक व्यावसायिक तनाव पाया गया।
(2) शिक्षकों मे गैर–शिक्षकों की अपेक्षा व्ैण्ण्ण् स्केल के उपस्केल अत्यधिक कार्य भार तथा जिम्मेदारी, पर अधिक अंक पाये गये।

(3) पुरूष अध्यापकों में महिला अध्यापकों की अपेक्षा अधिक तनाव पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों की ग्रामीण एवं शहरी शिक्षिकाओं का व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना :– शोधकर्ता ने अपने शोध पत्र में शून्य परिकल्पना को चुना है। अनुसंधान के लिए शून्य परिकल्पना सर्वोत्तम होती है।

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन :

1. अध्ययन में जनपद चित्रकूट (उ0प्र0) के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक 50 शिक्षकों एवं 50 शिक्षिकाओं को न्यादर्ष के रूप में चयनित किया गया है।
2. यह शोध अध्ययन केवल जनपद चित्रकूट उत्तर प्रदेष के प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

शोध विधि :

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका सम्बन्ध जनपद चित्रकूट उत्तर प्रदेष के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के सर्वेक्षण, आंकड़ों का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता के द्वारा यादृच्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा जनपद चित्रकूट उत्तर प्रदेष के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जनपद चित्रकूट उत्तर प्रदेष के शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शोधकर्ता ने लाटरी विधि का प्रयोग करते हुए कुल 10 शहरी तथा 10 ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों को अपने शोध कार्य हेतु चुना है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

इस अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने व्यावसायिक तनाव मापनी ए0 के0 श्रीवास्तव एवं ए0पी0 सिंह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधकर्ता ने आंकड़ो का ऑकलन कर टी–मान प्राप्त करके निष्कर्ष प्राप्त किया है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

शोधकर्ता ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया है। शोधकर्ता ने आंकड़ों की गणना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया, इसके पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधार पर प्रमाणिक विचलन निकाला, तत्पश्चात् शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के चर का तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी–मान का प्रयोग किया।

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका–01

प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शिक्षक	50	132.30	16.77	2.36	1.61	N.S.
02	शिक्षिकाएं	50	136.12	16.62			

N.S. असार्थक

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 132.30 व 136.12 तथा मानक विचलन 16.77 व 16.62 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 1.61 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0. 01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना सं0–01 " प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। "–स्वीकृत की जाती है।

प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण हो सकता है कि सांख्यिकीय के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों का व्यावसायिक तनाव मान शिक्षिकाओं की तुलना में मध्यमान कम तथा मानक विचलन अधिक पाया गया परन्तु तुलनात्मक रूप में प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का कार्य तनाव समान रूप से पाया गया।

तालिका–02

प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शिक्षक	50	135.71	15.68	2.15	0.93	N.S.
02	शिक्षिकाएं	50	137.20	14.74			

N.S. असार्थक

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 135.71 व 137.20 तथा मानक विचलन 15.68 व 14.74 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 0.93 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0. 01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना सं0–02 " प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। "–स्वीकृत की जाती है।

प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसका प्रमुख कारण हो सकता है कि सांख्यिकीय के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों का व्यावसायिक तनाव मान शिक्षिकाओं की तुलना में मध्यमान कम तथा मानक विचलन अधिक पाया गया परन्तु तुलनात्मक रूप में प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का कार्य तनाव समान रूप से पाया गया।

प्रस्तुत शोधपत्र का निष्कर्ष :

1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं पाया गया।
2. प्राथमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक तनाव में कोई साथर्क अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सिद्दीकी, एम0एच0 (2004) टेक्नोलॉजी इन टीचर एजुकेशन, नई दिल्ली : ए पी एच पब्लिशिंग कार्पोरेशन।

2. सिंह, अरुण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन।
3. सिंह, अरुण कुमार (2005) आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।
4. सिंह, अरुण कुमार (2006) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना : मोतीलाल बनारसीदास।
5. कपिल, एच.के.,(2004) ;अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा,
6. गैरिट, हेनरी ई0,(1989); शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
7. गुप्ता, एस.पी. अप्रैल (1983), ए स्टडी ऑफ जॉब सैटिसफैक्शन एट थ्री लेवल्स आफ टीचिंग, इण्डियन एजूकेशन रिव्यू, वाल्यूम–18, पृष्ठ–75–78
8. मिश्रा, के0एन0 (1991) इण्टर रिलेशनशिप बिटवीन आर्गेनाइजेशनल कान्फ्लिक्ट इन स्कूल टीचर स्ट्रेश एण्ड बर्न आउट इन रिलेशन टू टीचर्स पर्सनालिटी एट प्राइमरी लेवल, इन एम0बी0बुच (एजु0), फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–II, पृ0–908, नई दिल्ली, एनसी0ई0आर0टी0।
9. नारंग, संध्या (1992) अ स्टडी आन वूमन प्राइमरी टीचर्स इन देलही : देयर रोल कान्फ्लिक्ट, परसेप्सन ऑफ एकाउण्टेबिलिटी एण्ड प्रोफेशनल कल्चर, इन एम0बी0बुच (एजु0), फिफ्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, वालयू–II, पृ0–1461, न्यू देलही, एन.सी.ई.आर.टी.।
10. कापर, सी0एल0 तथा केली, एम0 (1993) आकुपेशनल स्ट्रेश इन हेड टीचर्स, ए नेशनल, यू0के0 स्टडी, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकशनल साइकोलाइज, वाल्यूम–66, पृ0सं0–130–143, एट www.ericedu.gov.in
11. हॉग, ग्लेण्डा एम0, जेम्स, जे0 तथा टेलर जे0 (1994) बर्न आउट इन म्यूजिक एण्ड मैथेमैटिक्स टीचर्स, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकशनल साइकोलॉजी, वाल्यूम–64, पृ0सं0 65–75, एट www.ericedu.gov.in
12. सुल्ताना, ए0 (1995) ए स्टडी ऑफ आकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वर्किंग वूमन इन रिलेशन टू पर्सनालिटी पैटर्न एण्ड सर्टेन डेमोग्राफिक वैरिएबुल, पी–एच.डी. थीसिस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
13. पीथर्स, आर0टी0 एण्ड फोगार्टी, जे0जे0 (2005) आकुपेशनल स्ट्रेश एमंग वोकेशनल टीचर्स, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एजूकेशनल साइकोलॉजी, पृ0 3–14।

Websites :

- www eric.ed.gov
- www.dartmouth.edu
- www.enwikipedia.org/ wiki
- www.google.co.in

****